महाकाली/शारदा और लोग – एक परिचय और विचार

गंगा की सहायक नदियों और उनके जल-संग्रहण क्षेत्र

महाकाली नदी को भारत और नेपाल में विभिन्न नामों से बुलाया जाता है जैसे काली, महाकाली, शारदा आदि। महाकाली नदी विशाल 'गंगा बेसिन' के घागरा उप-बेसिन के उच्च हिमालय क्षेत्र (>3600 मीटर) से निकलती है और नेपाल के तराई-मैदानों से बहते हुए, उत्तराखंड-उत्तर प्रदेश में शारदा कहलाती हुई, उत्तर प्रदेश में घागरा की उपनदी बन कर उसमें मिल जाती है। गंगा बेसिन[1] का लगभग एक तिहाई जलग्रहण क्षेत्र उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में पड़ता है। महाकाली का कुल जलसंग्रहण क्षेत्र 15,260 वर्ग किलोमीटर के आस पास है, जिसका अधिकतम हिस्सा (9,943 वर्ग कि॰मी॰) उत्तराखंड में पड़ता है और बाकी नेपाल में। महाकाली एक सीमावर्ती (ट्रांस-बाउंडरी/अंतर्राष्ट्रीय) नदी है। पूरे दक्षिण एशिया में, समुदायों की नदी पर निर्भरता, उनके आपसी सामाजिक-सांस्कृतिक रिश्ते, और आपसी आर्थिक निर्भरता में अंतर-संबंधों की परस्पर भूमिका रही है और बदलते समय के साथ इसे और भी मज़बूत करने की आवश्यकता है।

हिमालय के उच्च, मध्य, निचले और बाहरी क्षेत्रों से, कई नदियां और गाड-गधेरे महाकाली में मिलते हैं और लगभग हर एक ऐसा संगम (कम से कम मुख्य नदियों का), एक सामाजिक-सांस्कृतिक, व्यापार और हाट-मेलों

[1] बेसिन का अर्थ बड़ा जल संग्रहण क्षेत्र या बड़ा जलगम है

का महत्वपूर्ण स्थान है। उत्तराखंड के शारदा घाट (टनकपुर बैराज) और बनबासा बैराज तक पहुंचने से पहले, मुख्य नदी एक निरंतर बहती धारा है। महाकाली/शारदा की जलग्रहण सीमा, नेपाल के सुदूर पश्चिमी क्षेत्र के चार जिलों बैतड़ी, दादधेलधुरा, कंचनपुर और दारचूला से गुजरती है जबकि उत्तराखंड में यह पिथौरागढ़ के ऊपरी उत्तरी-पश्चिमी भाग को छोड़ कर, तकरीबन पूरे चंपावत, बागेश्वर (कपकोट तहसील के ऊपरी भाग को छोड़ कर) और अल्मोड़ा, उधम सिंह नगर के कुछ भाग से गुजरती हुई सम्पूर्ण क्षेत्र को चिन्हित करती है। अपने ऊपरी हिस्से में महाकाली, गरब्यांग, तवाघाट, और धारचूला की संकरी घाटियों से बहती है और निचली पर्वत श्रंखला में पहुंच कर फैल जाती है। यहीं ऊपरी शारदा बैराज बना है जहां नदी के पानी को शारदा नहर प्रणाली में छोड़ा जाता है।

संगम

इस क्षेत्र का परिस्थितिकीय-विन्यास, कई तरह की भौगोलिक विशेषताओं और महत्ताओं, विस्तार की सीमाओं, सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक रिश्तों, और अन्य पहलुओं को ज़ाहिर करता है। तवाघाट वह जगह है जहां धौलीगंगा और काली का संगम होता है, यहां से नीचे बहते धारचूला में एनएचपीसी की 280 मेगावाट की धौलीगंगा परियोजना कार्यरत है। धारचुला, बार-बार भूस्खलन होने और बाढ़ आने से प्रभावित क्षेत्र है। भूस्खलन की सबसे ताज़ी घटना अक्तूबर 2016 में हुई है। जून 2013 की अकस्मात वर्षा से, नेपाल के दारचुला और धौली घाटी में उत्पन्न संकट भी बहुत पुराने नहीं हैं। भारत के धारचूला और नेपाल के दारचूला का नाम चाहे थोड़ा अलग हो पर इन कस्बों और इनमें रहने वाले लोगों के पारंपरिक संबंध और रिश्ते एक जैसे ही हैं। गोरीगंगा, मिलम और नन्दा देवी ग्लेशियर से बनकर बहते हुए, जौलजीबी में काली से मिल जाती है और यह जगह भी दोनों देशों के समुदायों के लिए एक आम बाज़ार के साथ-साथ सामाजिक मिलन/जलसे का केंद्र भी है। जौलजीबी से कुछ और नीचे नेपाल की चमलिया नदी, गुरास हिमाल से बहती हुई काली नदी के बाएं तट पर मिलती है – यहां एक 30 मेगावाट की पनबिजली परियोजना पूरी होने के इंतज़ार में है। और नीचे बहते हुए काली नदी का सरयू नदी से संगम पञ्चेश्वर में होता है - सरयू में पनार और पूर्वी रामगंगा रामेश्वर के पास मिलती हैं, बागेश्वर में गोमती और सरयू का संगम है। काली (शारदा) के दाएं तट पर सरयू के बाद लोहाघाट से निकली लोहावती नदी और नैनीताल की पर्वत श्रंखला से निकली लधिया नदी, बाहरी हिमालय क्षेत्र में मिलती हैं।

प्रक्रिया के मुख्य पहलू और उद्देश्य

संगम संवाद: इस प्रयास या कार्यक्रम से, महाकाली/शारदा जलग्रहण क्षेत्र के भीतर की नदी घाटियों के किनारे बसे दोनों देशों के समुदायों के बीच के सामाजिक, पर्यावरणीय, सांस्कृतिक, पारम्परिक, आर्थिक, जलवायु परिवर्तन, आदि पहलुओं को समझना, लोगों के साथ और लोगों के बीच आपसी समझ और बातचीत को बढ़ाना है। नदियों के संगम को हमेशा महत्व दिया गया है और इसी संदर्भ में कुल 12 संगम संवाद किए जाएंगे (7 उत्तराखंड में और 5 नेपाल में)। मेलों और सांझी जगहों का उद्देश्य लोगों में आपसी संवाद को बढ़ाने और मिलने जुलने के लिए होता ही रहा है पर साधारणतः अलग-अलग घाटी के लोग इन मौकों के अलावा बहुत ही कम मिल पाते हैं, इसलिए यह संगम-संवाद लोगों के मुद्दों को प्रमुखता से उजागर करेगा। यह एक दिवसीय संवाद, स्थानीय और सीमांत नदियों, सामुदायिक संस्थाओं, संसाधन-प्रबंधन, विकास के मुद्दों और अन्य विषयों पर केन्द्रित होगा और यही मुद्दे विभिन्न आयु-समूहों और महिलाओं-पुरुषों से जुड़े रहे हैं। यह एक चुनौती तो है पर यह भी आशा है कि कुछ ऐसे मुद्दे उजागर होंगे जो भविष्य के लिए और गहन सोच और आदान-प्रदान को गति और दिशा देंगे।

निरंतरता और प्रासंगिकता [आवाज़-आधारित संदेषण (संदेशों का आदान-प्रदान)]: इसका उद्देश्य उन सभी आवाज़ों को जोड़ना है जो अभी तक अनसुनी हैं। और ये मुद्दे इतने ज़्यादा होंगे कि ज़रूरत एक साधारण और लंबे समय तक चलने वाली प्रणाली/व्यवस्था की होगी, जहां भौतिक प्रयास के बिना, आप अपने कार्यक्रम, मुद्दों, घटनाओं या जानकारियों को सांझा कर सकें। इसका नाम 'शारदा के स्वर' है।

आप इस नंबर पर **(7409465288)** मिस्सड कॉल देकर इस प्रणाली/व्यवस्था के संपर्क में रह सकते हैं। जब आप मिस्सड कॉल देंगे, आपको वापस कॉल आएगा – इसके बाद आप अपना संदेश (बोल कर) दर्ज कर सकते हैं, अपने ही संदेश को दोबारा सुन सकते हैं, और दूसरों द्वारा दर्ज संदेशों को भी सुन पाएंगे। इन संदेशों के सत्यापन के लिए आपसे बातचीत कर इसको सामान्य स्तर पर सुनने के उद्देश्य से ठीक किया जाएगा। एक बार फ़ाइनल होने पर संदेश के मुद्दे को वर्गित कर वैबसाइट पर अपलोड कर दिया जाएगा ताकि आपकी बात सभी सुन सकें। इस पूरी प्रणाली/व्यवस्था का उद्देश्य उन समुदायों को जोड़ना है जो अपने समुदाय या क्षेत्र के मुद्दों को उठाकर, उनके बारे में सुधार/जानकारी देना तो चाहते हैं पर उनके पास शायद दूसरी घाटियों के समुदाय/यों और बाहरी दुनिया के साथ सांझा करने के उपाय नहीं हैं। अनेक मुद्दे जो समयवार दर्ज होंगे उनका

विश्लेषण कर संबंधित जन प्राधिकरणों या फैसला करने वाले विभागों की जानकारी में लाया जाएगा ताकि इन मुद्दों के निपटारे की ओर कार्यवाही हो।

सरकारों के बीच संबंध/सहयोग

भारत नेपाल शांति और मैत्री संधि 1950 ने अब तक दोनों देशों के लोगों को सीमाओं के आर-पार आने जाने की औपचारिकताओं से दूर ही रखा है और सामाजिक रिश्तों को कायम भी। महाकाली बेसिन की पारिस्थितिकी और सामाजिक-सांस्कृतिक समानताओं से यह पूरा क्षेत्र एक सा लगता है। 1996 की महाकाली संधि, दोनों सरकारों द्वारा, पानी के सहभाजन, नदी-प्रबंधन, और अवसंरचना निर्माण का एक महत्वपूर्ण बंधन और तरीका है। इसके क्रियाकलाप का खांचा दोनों सरकारों के द्वारा तय किया जाता है। जबकि समय-समय पर जल सहभाजन और नदी पर बहस चलती रहती है, इससे समुदायों के आपसी रिश्तों पर कोई फर्क नहीं पड़ा पर समुदाए हाशिए पर खड़े दर्शक मात्र ही बने रहे और उनकी ज़रा सी भूमिका भी सीमांत नदियों पर किए फैसलों में नहीं रखी गई।

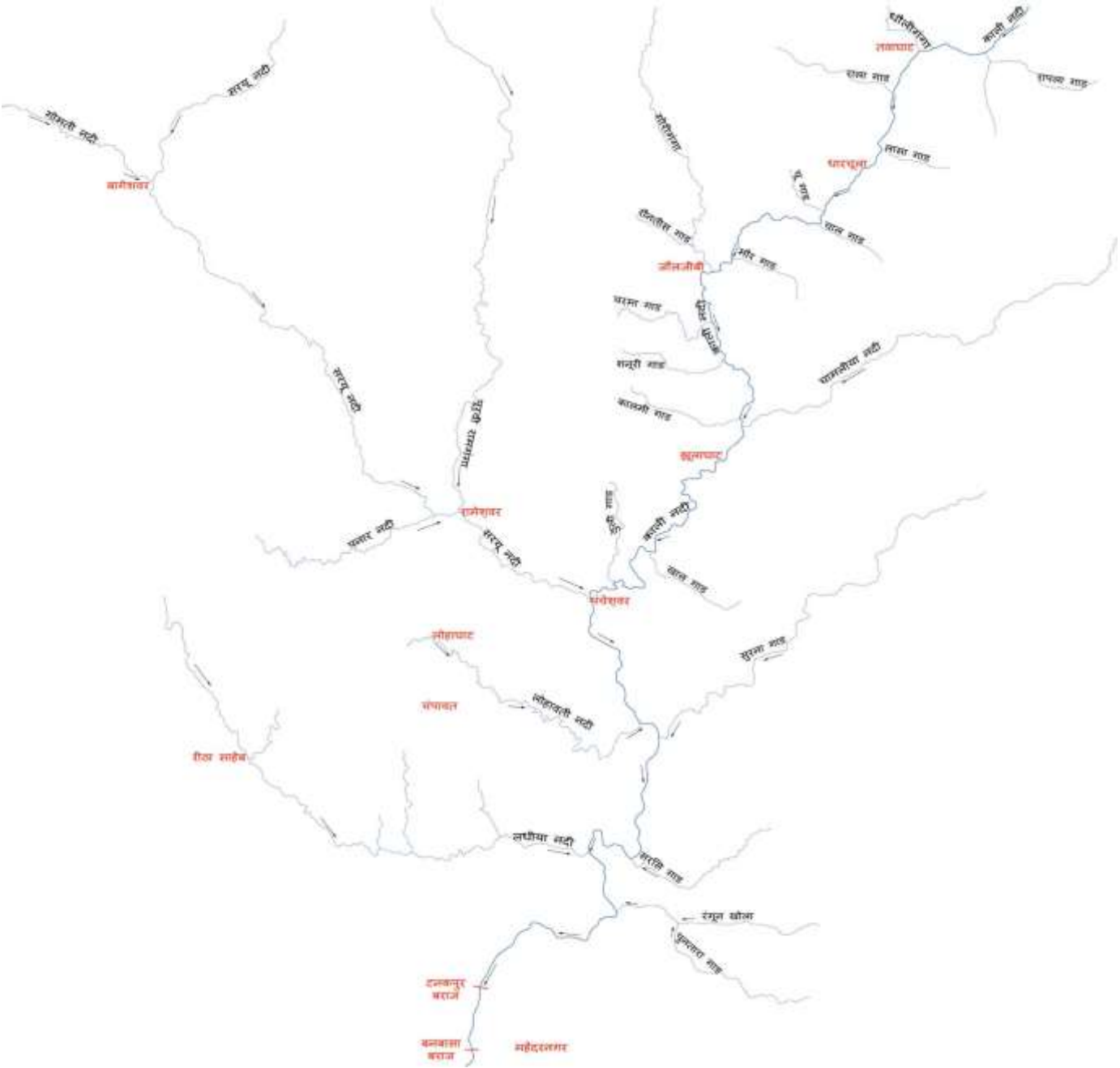

शारदा के स्वर?

हालांकि नदियों और घाटियों की आवाज़ तो होती है पर नदियां या घाटियां बोल नहीं सकतीं, आप की आवाज़ ही इन नदियों और घाटियों की भी आवाज़ है! शारदा के स्वर का उद्देश्य उन सभी आवाज़ों को जोड़ना है जो अभी तक अनसुनी हैं और यह लंबे समय और कारगर तरीके से चलती रहे इसके लिए फोन आधारित प्रक्रिया बनाई गई है जो सरल है।

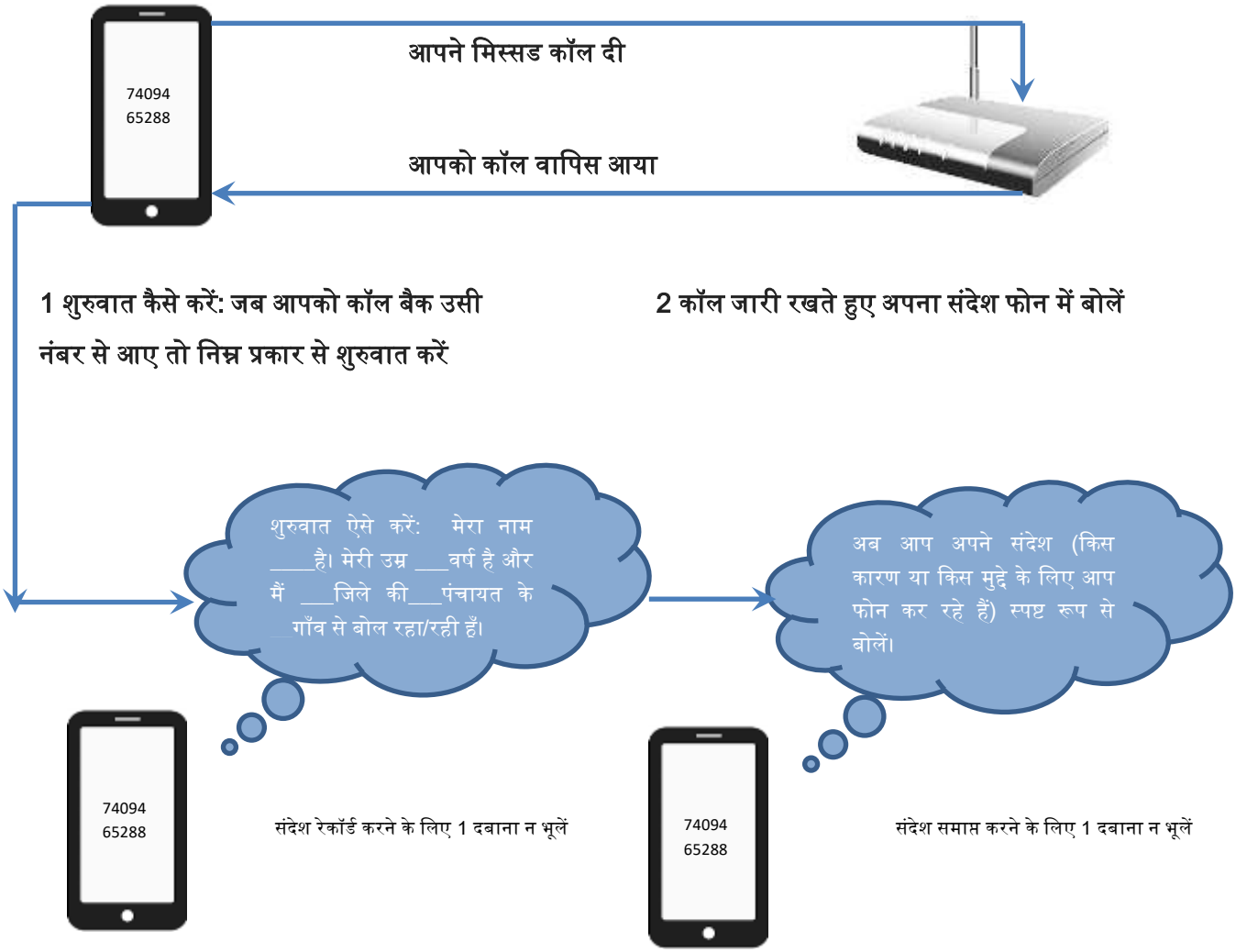

<u>कुछ और जानकारी:</u>

- हर घाटी की कुछ खास विविधता-विशेषता भी है और समस्याएँ भी जो समुदायों से जुड़ी हैं – तो आप तय करें की आप क्या बताना चाहते हैं।
- कुछ अच्छे काम अगर किसी घाटी में हुए हैं उनको आप सांझा कर सकते हैं
- अलग-अलग क्षेत्र से एक ही प्रकार के संदेश भी आएंगे और भिन्न-भिन्न भी।
- अपनी भाषा को साधारण और सभ्य रखें ताकि आपका संदेश अगर कोई और सुने तो उन्हें साफ समझ आए।
- एकत्रित संदेशों का विश्लेषण कर संबन्धित विभागों/निर्णय लेने वाले संस्थानों से संपर्क कर उनको भी इन विषयों पर ध्यान केन्द्रित करने को कहा जा सकता है।